International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-01-2026; Accepted: 11-02-2026; Published: 26-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 178-180

बघेली सोहर गीतों में सिया राम

करुणा सिंह[1], डॉ. प्रदीप कुमार विश्वकमा[2]
[1] शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्व विद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] शोधार्थी निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, शास. शासकीय ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
राम लोक नायक हैं अत: भारत की लगभग सभी जनपदीय तथा क्षेत्रीय भाषाओं में रामकथा के सूत्र अपनी–अपनी संस्कृति के आधार पर विकसित हुए हैं। इसीलिए भारत भूमि में प्रत्येक क्षेत्र का लोक साहित्य भगवान श्रीराम के उच्चतम आदर्शों और मूल्यों का संचित आख्यान है। राम सबके लोकमन में ऐसे रचे–बसे हुए हैं कि 'राम जी के चिरई, राम जी के खेत, खाइ लेऽ चिरई भरि–भरि पेट' जैसी कहावतें खेत–खलिहान, गली–मुहल्ले तक जन–जन में व्याप्त हैं।
बघेली लोक जीवन का कोई प्रसंग, कोई संस्कार ऐसा नहीं है जिसमें राम–सीता की स्मृति न हो। इसीलिए बघेली लोक साहित्य के अन्तर्गत विपुल मात्रा में लोकगीतों तथा कथाओं के माध्यम से रामकथा के विविध प्रसंगों यथा– रामजन्म, विवाह, वनगमन, भरत मिलाप, लक्ष्मण मूर्छा, केवट प्रसंग, कौशल्या विरह, शबरी प्रसंग और अयोध्या काण्ड, लंका काण्ड आदि को उद्घाटित किया गया है। हजारों वर्षों से भारतीय लोक संस्कृति में व्याप्त 'रामकथा' की यह परम्परा शास्त्रीयता से अलग जिस सहज, सुगम लोक साहित्य का वितान रचती है उसमें बघेली का लोक साहित्य अत्यंत उर्वर प्रकृति का है।

मूल शब्द: लोक के राम, राम और रामराज्य, लोकनायक राम और राजा राम

विंध्य मेकल क्षेत्र की बोली बघेली के विविध तरह के लोकगीतों मे राम सीता, कृष्ण और महाभारत के तमाम पात्रों का कई कई बार ज़िक्र हुआ है। लोक इन पात्रों और इनसे जुड़ी घटनाओं को अपनी ही दृष्टि से देखता और प्रस्तुत करता है। संग्रहित हजारों बघेली लोकगीतों में हम राम को अलग ही तरह से देखते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी मानस में कहते हैं कि– 'हरि अनंत हरि कथा अनंता, बहु बिधि कहहिं सुनहिं सब संता' दरअसल मानस की यह चौपाई लोक में व्याप्त राम के वैविध्यपूर्ण स्वरुप 'लोक के राम' की व्यापकता को दर्शाती है। बघेली बोली बानी के तमाम लोक गीतों एवं जातीय गीतों में राम का विहंगम स्वरुप देखने को मिलता है। विहंगम इस परिप्रेक्ष्य में कि राम के बहाने, राम के जीवन के अनछुए, अनकहे पहलुओं पर लोक ने अपनी राय रखी है। मैं यह नहीं कहता कि यह सारे कथानक राम के जीवन के अंश हैं लेकिन समाज ने जब राम को लोक नायक बनाया तो लोक नायक होने के नाते सहमति, असहमति, आरोप, प्रत्यारोप और प्रतिरोध की गुंजाइश भी रखी है और उन्ही के बहाने लोक की कुरीतियों, विडंबनाओं पर प्रहार किया है। तो आइये बघेली सोहर लोक गीतों में राम से संबंधित कथानक वाले गीतों पर एक नज़र डालते हैं–

करि असनान राजा दसरथ देहिंया निरखि रहैं हो
रनिया मोर उमिर नियरान पूत एकउ नहीं हो
गुरुअ बसिस्ठ बोलामैं त गोड़ राजा लागैं हो
सामी सून है मोर अजोध्या त एक ललन बिन हो
सब मुनि एक मति होयँ त पतरा बिचारैं हो
गुरु होम कइ भसम निकारि दुइ लोई बनाबैं हो

दशरथ ने वसिष्ठ से अनुरोध किया कि मेरी उम्र समाप्त होने को है, लेकिन मुझे कोई पुत्र नहीं प्राप्त हुआ है। मुनियों ने आपस मे परामर्श किया तथा यज्ञ करके दो पिंड तैयार किए। एक पिंड बड़ी रानी कौशिल्या तथा दूसरा पिंड छोटी और दुलारी रानी कैकेई को दे दिया। कहा गया कि यह पिंड दोनों खालें तो गर्भवती हो जाएंगी। जब दोनों रानियाँ पिंड खाने बैठीं तो उन्हे अपनी बहन सुमित्रा की याद आई और उन्हे बुलाकर दोनों ने अपने पिंड से आधी–आधी लोई सुमित्रा को दिया ताकि वह भी गर्भवती हो। कौशिल्या केकई को एक–एक तथा सुमित्रा को दो पुत्र हुए। पुत्रोत्पत्ति की खबर सुनकर चारों तरफ आनंद–बधावे बजने लगे और मंगल गान आरंभ हो गया। राजा और रानियों ने वस्त्राभूषण लुटाना शुरू कर दिया। इस अवसर पर स्वर्ग से देवतागण भी दशरथ के पुत्रों को आशीर्वाद देने आए। इस गीत में लोक जिस पंक्ति को उल्लेखित करता है वह यह है कि –

नहीं देतीं आधी आधी लोइया त गरभ नहीं होतिन हो
अब कइसे होतें लाल लखनबा बनै सँग रहतें हो

लोक कहता है कि राजा ने सिर्फ दो ही रानियों के गर्भ के लिए पिंड दिये सुमित्रा की उपेक्षा की। बाँझ का दुख एक बाँझ औरत ही समझ सकती है अतः दोनों रानियों से सौत सुमित्रा को अपने पिंड से आधा–आधा पिंड देकर स्त्री धर्म निभाया। यदि दोनों रानियों ने सुमित्रा को भी पिंड न दिया होता तो राम के पग–पग पर साथ देने वाला, साथ में वनवास काटने वाला लक्ष्मण जैसा छोटा भाई कहाँ से मिलता ?

अँजुरिन लै गंगाजलिया कहँउ राम फुरि फुरि हो
अब जनबय मैं सुतबा तोंहार रबनबा नहीं जानेहुँ हो
राम क भएँ बनिमास त सँग सँग बन गएउँ हो
अब निकसिन मोहि अजोध्या पै सँग नही आएँ हो
गोड़बा म रहै नित मथबा अउ अँखिया भुइन महि हो
अब पुनि पुनि देउँ परिच्छा त रहहुँ सोहागिन हो
मान रहै बाढ़य अभिमान किरति फूलय राम कइ हो
अब तिरिअय होय पथरबा सकल सहै अपजस हो
कहाँ गये राजि बसिस्ठ कहाँ विस्वमित्र गएँ हो
अब सिअय के बेर नदानें त लिखनहारी हो
लिखि अनलेख लिखनिया पै राम अबध लिखै हो
अब पुनि पुनि सिया बनिमास तिरिया कै कारन हो

उपरोक्त सोहर गीत राम द्वारा सीता की अग्नि परीक्षा के लिये की गई बाध्यता और सीता के वन निकालने के अमानवीय निर्णय को

उल्लेखित करता है। सीता राम से कहती हैं कि – 'प्रिय मैं हाथ में गंगाजल लेकर कहती हूँ कि मेरी कोख में जो बच्चा है, जिसे मैं जन्म दूंगी वह आपकी संतान है, मैने रावण को कभी नही जाना, मेरा उससे संसर्ग नही हुआ।' लेकिन राम ने सीता की एक न सुनी और उन्हे अयोध्या से दूर वन को निकाल दिया। सीता वन्य पथ पर चलते हुए मन ही मन सोच रही हैं कि – 'राम को वनवास मिला तो मैंने भी वन वरण किया, उनके साथ–साथ चली, लेकिन मुझे अयोध्या से निकाला गया और कोई मेरे साथ नही आया। लगता है की राम चाहते हैं की मेरा सिर सदा उनके पैरों में नत रहे और मेरी आँखे ज़मीन की ओर झुकी रहें। मैं बार–बार परीक्षा देती रहूँ, सत्चरित्र का प्रमाण देती रहूँ। अगर मैं ऐसा करती हूँ तो शायद मैं राम की व्याहता होने का दर्जा पा सकूंगी और मेरे राम का यश पताका चारों दिशाओं में लहरायेगा। राम की कीर्ति तीनों लोकों में हो इसके लिये मुझ स्त्री को पत्थर हो जाना होगा और सदा अपमान सहना होगा। मैं ईश्वर से सदैव प्रार्थना करूंगी की मेरे राम का यश बना रहे, उनकी ठकुराई बनी रहे, लेकिन यदि यह सब मेरे स्वभिमान के बदले कायम रहता है तो मैं अपनी देह त्याग दूंगी लेकिन स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं करूंगी।'
ऐसा कहते हुए सीता की कारी–कारी आँखों से आँसू महि पर झरने लगे। लोक कहता है कि – 'राम, क्या तुम्हारी आँखों से भी आँसू निकले जब तुमने सिया को वनवास दिया ? राम, उस दिन तुम्हारी माँ कौशिल्या की साँसें हृदय में नही समा रहीं थी। उनका कलेजा टुकड़े–टुकड़े हुआ जा रहा था, वह फफक–फफक कर रो रहीं थी जिस दिन तुम्हारे पिता दसरथ ने तुम्हे वनवास दिया था।' राम, इस लोक में तिरिया का दुख बहुत भारी है, उसे लिखने बैठोगे तो स्याही सूख जायेगी और कागज़ खत्म हो जायेगा और कई जुग बीत जायेंगे। राजगु: बसिस्ठ कहाँ हैं और कहाँ हैं ब्रम्हर्षि विश्वमित्र, सिया की कथा लिखने की बारी आई तो लेखनहारी ब्रम्हा भी शांत बैठ गये? ब्रम्हा ने अनगिनत लेख लिखे हैं लेकिन हर लेख में, कथा में राम को अयोध्या और सीता को वनवास ही लिखा है।

आगी लागय तोरे मोहरिया त तोरे महलिया म हो
अब अबध के राज पुजरिया हँथिया असबारय हो
कोउ नहीं राम बोलइया न कोउ कहइया न कोउ टोकइया हो
अब गर्भिन धेरिया हमार पुजरिया असबारय हो
हिरना त आएँ सुनाबत गउआ बोमाबत हो
अब एक नहीं आएँ राजा भरत पुजरिया असबारय हो

लोक ने राम, रामराज्य और अयोध्या में चल रही उस सामंती परंपरा का पुरजोर विरोध किया है जिसका जिक्र महाकवि वाल्मीकि या तुलसीदास अपने ग्रंथों में नहीं करते। उपरोक्त सोहर गीत में अयोध्या की सामंती परंपरा में पण्डे पुजारियों द्वारा आम जनमानस पर किया जा रहा शोषण, अत्याचार साफ़–साफ़ देखा जा सकता है। अयोध्या के राजपुरोहित द्वारा मालिन की बेटी का अपहरण कर लिया गया है। मालिन की बेटी पुरोहित से उसे छोड़ देने की लाख मिन्नत करती है लेकिन उसे छोड़ा नहीं जाता। मालिन कि पुत्री को तरह–तरह का प्रलोभन दिया जाता है कि उसे पुरोहित रानी बनाकर रखेगा, वह पुरोहित की बात मान जाए। मालिन पुत्री कहती है कि– 'मुझे तुम्हारी मोहर, महल आटारी कुछ नहीं चाहिए लेकिन उसकी कौन सुनता है'? मालिन अपनी बेटी के लिये राजदरबार में गुहार लगाती है लेकिन इस अत्याचार के खिलाफ न तो कोई बोलने वाला है और न ही कोई टोकने वाला। यह किसी भी शासनकाल में पण्डे पुरोहितों द्वारा आम जनमानस पर किये जाने वाले अत्याचार की चरम स्थिति हो सकती है। मालिन कहती है 'स्वामी चलो इस अवध राज्य को छोड़कर किसी निर्जन वन की ओर निकल चलें। देखिये न मेरे लिये, मेरी बेटी के लिये जंगल के मूक जानवर तक खड़े हो गए, हिरन आया, गाय आई लेकिन जो भरत राम कि खड़ाऊँ रखकर राज्य को चलाने की बात करता है उसके कान में जूँ तक न रेंगी, वह न आया'। राजपुरोहित मेरी गर्भवती बेटी को उठा ले गया और सब ऐसे मूक हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो।

गंगा कछारे राम कुइँया त जिरिया छिटाएऽन जिरिया बोबाएऽन हो
अरे मिथिला के अभिर सीतल रानी धनुहा चलामयँ हो
अस नहीं देखेऽन हो तिरिया देखेऽन नहीं धेरिया हो
अब नान्ही नान्ही जिरिया के अँकुर उहीं घोड़बा नचामयँ हो
सिया जब रेंगय राम भुई पर धरती दमकि रहँय धरती दरकि रहँय हो

अब चढ़ि चलयँ सिय जब घोड़बा त सँसिया अटकि रहय हो
सीता को जिस तरह रामायण या रामचरित मानस में बेबस और लाचार दिखाया गया है, लोक सीता को बिल्कुल उसे विपरीत प्रस्तुत करता है। उपरोक्त सोहर में सीता मिथिला कि महान योद्धा है न कि सुकुमारी सीता। लोक में एक किवंदंती है कि सीता के घर में शिव का धनुष रखा हुआ था सीता जब घर को लीपतीं–पोततीं तो सहज ही उस धनुष को उठाकर एक जगह से दूसरे जगह रख देतीं। एक दिन मिथिलापति ने सीता को ऐसे करते देखा और वह अचंभित रह गए कि जिस धनुष को देव दानव न उठा पाए उसे सीता सहज ही एक हाथ से उठाकर इधर–उधर रख रहीं है। मिथिलापति समझ गए कि हो न हो सीता पर किसी दैवीय शक्ति का हाथ है और उन्होंने मन में ऐसा विचार कर सीता स्वयंवर में शिव धनुष पर चाप चढ़ाने की शर्त रखी। लेकिन जब हम इसी प्रसंग को सोहर गीत में देखते हैं तो यह बिलकुल विपरीत हो जाता है और सीता के महान योद्धा होने की बात को इशारों में नहीं बल्कि साफ़ तौर पर स्वीकार करता है जैसा कि इस गीत में दृष्टव्य है– गंगा किनारे मालिन ने जीर बोया है और वह देखती है कि मिथिला की अभीर (लड़ाकू) राजकुमारी सीता अपने घोड़े से उसकी सारी खेती बर्बाद किये दे रही हैं। मालिन कहती है कि– सीता जब धरती पर चलती हैं तो धरती दमकने और दरकने लगती है और जब घोड़े पर असबार हो घोड़ा दौड़ाती हैं तो बड़े–बड़े महारथियों की साँसे अटक जाती हैं।

बहिनी कउन छयला चित घालिन त गरभ जाननेऽ हो
पुरुबय पच्छिउना एक सगरा बछरू एक पानी पिअयँ हो
भइया ओय छयला दिहिन चित घालि त गरभ जनानें हो
बोलिया त बोलिउ मोर बहिनी बोलय नहीं जानिउ हो
अब कइसे बछरु चित घालिन त गरभ जनइही हो
खेतबा म मिली भउजइया खिरिया खाए चारि सुत हो
जइसय कुंती के जनमे करनबा अउर पाँच पाण्डउ हो
भइया ओईसय गरभ जनानेऽन बछोलना के कारन हो

क्या कभी बछड़े का जूठा पानी पीने से किसी का गर्भ ठहर सकता है? आप कहेंगे यह कैसा सवाल है? क्या हम प्रकृति को चुनौती दे रहे हैं? नहीं, बिलकुल नहीं, हम सिर्फ आपका ध्यान उपरोक्त सोहर गीत कि ओर आकृष्ट कराना चाहते हैं। यह कथा है अयोध्या की। राम की बहन रूक्मिन का विवाह पूर्व गर्भ ठहर गया है। जब यह बात राम को पता चलती है तो वह बहन से पूछते हैं कि 'तुम किसके साथ हम बिस्तर हुई, तुम गर्भवती हुईं। मुझे उसका नाम बताओ'? रुक्मिन कहती हैं कि 'भाई बछड़े का जूठा पानी पी लिया मैंने और गर्भ ठहर गया'। राम कहते हैं यह कैसे संभव है? तुम झूठ बोल रही हो। तब रुक्मिन कहती हैं कि–'भाई जिस तरह खेत से सीता भावज मिलीं, खीर खाने से

दशरथ के चार बेटे, जैसे कुंती के कर्ण और पाँच पाण्डव ठीक उसी तरह बछड़े के कारण मैं भी गर्भवती हुई'। राम यह सुन रुक्मिन के सामने शर्त रखते हैं कि यदि तुम्हारे गर्भ से बछड़ा हुआ तो हम तुम्हें और उसे यहीं अवध में रखेंगे। यदि किसी मानव का जन्म हुआ तो तुम्हे राज्य से बाहर निकाल देंगे। यह सोहर हमे लोक में दो रूपों में मिलता है। एक तो रुक्मिन के गर्भ से मानव बच्चे का जन्म होता है और उसे अवध से निकाल दिया जाता है। दूसरा कि रुक्मिन के गर्भ से बछड़े का जन्म होता है और उसे अवध में ही रहने दिया जाता है। लेकिन बछड़े को जन्म देने वाली माँ का दुःख असहनीय है। रुक्मिन राम से कहती है कि भाई मेरे बेटे (बछड़े) को भैने (भाँजा) मानकर रखना। जब यह हल में चलने लायक हो जाये तो इसे अगले हरे का बैल मानकर चलाना और भांजे की तरह स्नेह बनाए रखना। हल जोतने के बाद दोपहर को जब जुआर हो तो उसे बीच की मेड़ का घास चराना। लेकिन बहन के बिन ब्याही माँ बनने के कृत्य से राम इतने क्रुद्ध हैं कि उसके बेटे (बछड़े) को कुल का दाग समझते हैं। बछड़े को हल में जोतकर अवध की बंजर ज़मीन पर चलाया जाता है। उसे समय से चारा–पानी नहीं दिया जाता। कुछ दिन बीतते बछड़ा भूख प्यास के मारे मर जाता है। यह सोहर मात्र कुछ पंक्तियों का गीत नहीं बल्कि महाकाव्य है जो अपने अन्दर जाने कितने–कितने मानव पीढ़ियों की कथाओं को समेटे हुए है

चारि चौखण्ड रे तलरिया सीता मुखारी करयँ हो
मोरि माया पिछ्बा उलटि केर चितबा त बाबू मोर आमय हो
सुरुज के ओर भले चितई चितय आँखी फूटयँ हो
ललना पिछ्बा उलटि नहीं चितब चितय नहीं जइहँय हो
जू हम होब सतिक सीता सतिय हमरे होइहँय हो
मोरे लाला फाटि जइहँय धरती समाब उलटि नहीं चितउब अजोध्या नहीं जाबय हो

उपरोक्त पंक्तियों में राम को यह पता चल जाता है कि लव और कुश दोनों उन्हीं के पुत्र हैं। राम उन्हें लिबाने के लिये महर्षि वाल्मीकि की कुटी आये हैं। सुबह–सुबह की बेला है सीता दातून कर रही हैं लव और कुश दोनों उनके पास आते हैं और माँ से कहते हैं कि– 'माँ जरा पीछे मुड़कर देखो पिता जी आये हैं'। सीता पीछे पलटने और राम को देखने से इंकार कर देती हैं और कहती हैं कि– 'सूरज की ओर एकटक देखकर आँख फोड़ लूँगी परन्तु पीछे खड़े तुम्हारे पिता को नहीं देखूँगी। मैं उन्हें देख ही न पाऊँगी। यदि मुझमें थोड़ा सा भी साँच बाकी होगा तो तो यह धरती फट जायेगी और मैं उसमें समा जाऊँगी लेकिन न राम को देखूँगी और न ही अयोध्या वापस जाऊँगी'। राम के प्रेम में किसी और की तरफ़ न देखने वाली सीता आज इतनी कटु कैसे हो गई? सीता जानती हैं कि वह जो भी करेंगी उसका असर सम्पूर्ण लोक समाज पर पड़ेगा इसलिए वह राम को त्याग देती हैं। धरती फटना लोक में असह स्थिति का पैदा होना है साथ ही नारी शक्ति का परिचायक भी। सीता ने प्रण किया कि मैं राम कि तरफ़ नहीं देखूँगी और न ही यहाँ से जाऊँगी तो धरती को अपनी कोख में जगह देना पड़ा। सम्पूर्ण राम प्रसंग में मिथिला की वीरांगना सीता विवाह उपरान्त असहाय सी दिखती हैं लेकिन यहाँ फिर मिथिला की सीता अपने स्वरुप में दिखती हैं और राम को यह बताती हैं कि निर्णय सिर्फ तुम्हीं नहीं मैं भी ले सकती हूँ। सनद रहे निर्णय लेने की क्षमता और विरोध की शक्ति सीता में तब आती है जब वह अरण्य संस्कृति के पोषक महर्षि वाल्मीकि के पास हैं। आदिवासी समुदायों की बीच हैं।

निष्कर्ष

सीता और राम भारतीय संस्कृति के परिचायक हैं। भारत में ही सबके अपने–अपने राम हैं। लोक के राम हमें अलग–अलग क्षेत्र की संस्कृतियों, भाषाओं, रीति–रिवाज़ों, परंपराओं और उनकी जातीय मान्यताओं के आधार पर मिलते हैं। बघेली बोली के गीतों में निहित राम को ही हम भिन्न–भिन्न जातीय गीतों के आधार पर अलग–अलग स्वरुप में देखते हैं। राम ही नहीं आदिवासी गीतों में सीता और लोक गीतों में सीता का स्वरुप भी बिलकुल भिन्न है। इतनी विविधता वाले देश ने राम को अपनाया है उन्हें लोकनायक माना है। राम को अपने गीतों में, अपनी बोली–बानी में जगह दी है और राम को अवध के राजा से परे उनकी पहचान को विशाल कैनवास दिया है। राम जैसे लोक नायक को किसी खाँचे में ढालने से पहले हमे अपने लोक और उसमे निहित 'राम' को ठीक तरह समझना चाहिए। लोक के राम भगवान राम की छवि वाले राम से कहीं भिन्न, वैविध्यपूर्ण और विशाल हैं। लोक में राम साझा विरासत के रूप में विद्यमान हैं।

संदर्भ सूची

1. शुक्ल, डॉ. भगवती प्रसाद – बघेली भाषा और साहित्य, उ. प्र. इलाहाबाद, साहित्य भवन प्रा. लि., प्रिंट 1971
2. 'विकल' गोमती प्रसाद, बघेली संस्कृति और साहित्य, मुल्ला रामू जी संस्कृति भवन बाणगंगा, भोपाल, के. ए. कबीर संचालक राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय भोपाल, प्रिंट 1999
3. सिंह, नरेंद्र बहादुर – बघेली लोक सम्पदा खण्ड – 1, सोहर राग परम्परा, एस. पी. बंगले के पीछे, वार्ड नं. 14, शहडोल म. प्र., अर्णव प्रकाशन, प्रिंट 2022
4. सिंह, नरेंद्र बहादुर – बघेली लोक सम्पदा खण्ड – 2, सोहर राग परम्परा, बी– 1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली, संचय प्रकाशन, प्रिंट 2022
5. सिंह, नरेंद्र बहादुर – बघेली लोक सम्पदा खण्ड – 3, सोहर राग परम्परा, बी– 1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली संचय प्रकाशन, प्रिंट 2022
6. सिंह, नरेंद्र बहादुर – बघेली लोक सम्पदा खण्ड – 4, ऋतु गीत परम्परा, बी– 1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली संचय प्रकाशन, प्रिंट 2023
7. बघेल, स्व. मुनराजू देवी – लोक गायक, ग्राम – लकोड़ा, तहसील– चुरहट, जिला– सीधी (म.प्र.)
8. बघेल, आशा देवी – लोक गायक, ग्राम – हर्रहा, तहसील– मऊगंज, जिला– मऊगंज (म.प्र.)
9. घासी, किरणकली – लोक गायक, ग्राम – बकबा, तहसील– मझौली, जिला– सीधी (म.प्र.)
10. पटेल, सुग्रीव प्रसाद – संवाहक मिथकीय परम्परा, ग्राम – पचोखर, तहसील– चुरहट, जिला– सीधी (म.प्र.)